سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ

सूरह क़ुरैश मक्का में उतारी गई (नाजिल हुई)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

आरंभ (शुरू) अल्लाह के नाम से जो अत्यंत दयावान, निरंतर (असीम) दयाशील है।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ (1)

क़ुरैश को अभ्यस्त करने (परचाने / मानूस करने) के कारण

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ (2)

(अर्थात) उनको शीत (सर्दी) और ग्रीष्म (गर्मी) की यात्रा का अभ्यस्त (करने के कारण)।

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۙ (3)

तो (उन्हें) चाहिए कि वे इस घर (काबा) के मालिक (रब) की उपासना (बंदगी) करें।

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ ٥

जिसने उन्हें भूख से (बचाकर) भोजन कराया

وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۧ (4)

और उन्हें भय (डर) से सुरक्षित (निश्चिंत) किया।